NSI, CSJM University sign MoU

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

A Memorandum of Understanding (MoU) was signed between National Sugar Institute, Kanpur and CSJM University, Kanpur on Monday. While the MoU was signed by Prof Narendra Mohan, Director, on behalf of the NSI, the Vice-Chancellor of CSJM University, Kanpur, Dr Neelima Gupta, signed on behalf of varsity. The two organisation reached to the understanding for exchange of faculty, staff and students for academic and research purposes, to undertake collaborative research and development projects on areas on mutual interest, exchange of academic publications and information and promotion of other academic activities and identifying areas of potential interest for further collaboration.

Dr Mohan said the collaboration looks forward for carrying out the collaborative research work on converting waste to resource in sugar and other food processing industries for value addition. He said as NSI was already working on development of clean and green energy, the two organisations will explore possibilities of developing low cost indigenous technologies for producing bio-energy and bio-fuels from domestic and industrial wastes.

Vice-Chancellor, CSJM University, Kanpur, Dr Neelima Gupta and Director, NSI sign a MoU on Monday. Pioneer

He further stated that the efforts of judicious use of technology for addressing issues of air and water pollution will also get a boost as with the collaboration, research facilities will be doubled and use of intellect from the two organisations will be possible. He said both look at developing innovative technologies and products and their commercialisation in future. He said the revenues so generated will be shared in 50:50 ratio between the two organisations.

The Vice-Chancellor, CSJM University while expressing her views said that with two reputed organisations joining hands besides R&D work getting impetus, the students of the two organisations will get a chance to hear eminent subject specialists and getting exposure of working on latest sophisticated laboratory equipment.

She said this will help in enhancing their knowledge and in-fact in over all personality development.

She said this will provide more employment avenues to the students as well.Dr Seema Paroha, Prof. Biochemistry, Jitendra Singh, Senior Administrative Officer, NSI and Dr Varsha Gupta, Associate Professor, CSJM University were also present on the occasion.

शोध को देंगे बढ़ावा, नई तकनीक का व्यवसायीकरण भी : कुलपति

कानपुर | कार्यालय संवाददाता

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय (सीएसजेएमयू) व राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) के विशेषज्ञ मिलकर अनुसंधान करेंगे। अनुसंधान के बाद उत्पन्न नई तकनीक और उत्पाद का न सिर्फ पेटेंट कराया जाएगा। बल्कि उसका व्यवसायीकरण भी किया जाएगा। इससे होने वाले लाभ को दोनों संस्थान में बराबर से बांट जाएगा।

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर एकेडमिक्स में सोमवार को कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की उपस्थिति में रजिस्ट्रार डॉ. विनोद कुमार सिंह और एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन के बीच एमओयू हुआ। इस समझौते के तहत दोनों ही संस्थान के विशेषज्ञ कचरे से बॉयो एनर्जी बनाने पर काम करेंगे। साथ ही चीनी मिल के सह-उत्पादों से मूल्यवर्धक उत्पाद बनाना और विभिन्न प्रक्रियाओं के लिए माइक्रोवियल स्ट्रैंस का आप्टीमाइजेशन एवं करेक्टराइजेशन शामिल है।

दोनों ही संस्थानों की फैकल्टी का भी आदान-प्रदान किया जाएगा। जिसका सीधा लाभ छात्रों को होगा। साथ ही दोनों संस्थानों में अत्याधुनिक लैब भी उपलब्ध है, जिसका जरूरत के अनुसार उपयोग किया जा सकेगा।

सीएसजेएमयू और एनएसआई मिलकर अनुसंधान करेंगे, दोनों संस्थानों के बीच एमओयू हुआ। ● हिन्दुस्तान

प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि इस समझौते के तहत पर्यावरण प्रदूषण से संबंधित समस्याओं पर शोध होंगे। विवि वर्तमान में गंगा के पानी की गुणवत्ता, भारी धातुओं (जैसे क्रोमियम, कैडेमियम, कॉपर, आर्सेनिक, लेड) की जांच कर रहा है। मछलियों पर भी शोध कर रहा है। जलीय जीवों पर प्रभाव का अध्ययन, जीन व प्रोटीन स्तर पर किया जाएगा। इस मौके पर डॉ. वर्षा गुप्ता, डॉ. सीमा परोहा, प्रो. नंदलाल, प्रो. सुधीर अवस्थी, डॉ. अंशू यादव, डॉ. विवेक सचान आदि मौजूद रहे।

समझौता पत्र हस्तांतरित करतीं विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता व एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन। साथ में अन्य प्रोफेसर।

विवि और एनएसआई कचरे से बायोफ्यूल बनाने पर करेंगे शोध

कानपुर। छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय व नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) के विशेषज्ञ अब एक साथ मिलकर कचरे से बायोफ्यूल बनाने पर शोध करेंगे। इसके लिए सोमवार को दोनों संस्थानों ने आपस में समझौता किया है। शोध से तैयार नई तकनीक और उत्पाद को दोनों संस्थान मिलकर पेटेंट भी कराएंगे और उसे मार्केट में भी लांच करेंगे। इससे होने वाले लाभ को दोनों संस्थान में बराबर से बांटा जाएगा।

विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर एकेडमिक्स में सोमवार को कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता और एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन के बीच एमओयू हुआ। इसके तहत दोनों ही संस्थानों के फैकल्टी का भी आदान-प्रदान किया जाएगा जिसका सीधा लाभ छात्रों को होगा। साथ ही दोनों संस्थानों की अत्याधुनिक लैब का उपयोग किया जा सकेगा। प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि इस समझौते के तहत पर्यावरण प्रदूषण से संबंधित समस्याओं पर भी शोध होंगे। अब जलीय जीवों पर प्रभाव का अध्ययन जीन व प्रोटीन स्तर पर किया जाएगा। इससे यह पता लग सकेगा कि कौन सा नया प्रोटीन बनने के कारण मछलियां व अन्य जलीय जीव प्रदूषित जल में अनुकूलित हो रहे हैं। डॉ. वर्षा गुप्ता, डॉ. सीमा परोहा, प्रो. नंदलाल, प्रो. सुधीर अवस्थी, डॉ. अंशू यादव आदि मौजूद रहे। ब्यूरो

www.jagran.com

सस्ते प्लांट से सुधरेगी नदियों की सेहत

जागरण संवाददाता, कानपुर : मिलों व टेनरियों से नदियों में गिरने वाले दूषित जल का अब कम लागत में प्रभावी शोधन किया जा सकेगा। छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय (सीएसजेएमयू) और राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआइ) इन औद्योगिक इकाइयों को कम लागत वाले छोटे ट्रीटमेंट प्लांट की तकनीक देंगे। कैम्पस में लगाने वाले ये ट्रीटमेंट प्लांट उन हानिकारक हैवी मेटल और रसायनों को पानी से निकाल सकेंगे जो कैंसर व पेट की बीमारियों की वजह बन रहे हैं। इस पर संयुक्त शोधकार्य के लिए सोमवार को दोनों संस्थानों के प्रमुखों के बीच करार हुआ।

सीएसजेएमयू के एक शोध में पता चला कि गंगाजल में आर्सेनिक, कैडमियम, लेड, जिंक कोबाल्ट व मरकरी की मात्रा जलीय जीवों के साथ साथ मनुष्य के शरीर पहुंचकर नुकसान पहुंचा रही है। यह रसायन फैक्ट्रियों से बाहर आने वाले अपशिष्ट व प्रदूषित पानी से आ रहा है। मिलों से निकलने वाले दूषित जल को साफ करने की तकनीक पर संयुक्त शोध के लिए सीएसजेएमयू कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता व एनएसआइ निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन के बीच सहमति बनी।

प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बताया कि शोध कार्य में यह देखा जाएगा कि गंगाजल व दूसरी नदियों की जल शृंखला क्यों टूट रही है? वहां रहने वाले जीव नदियों में पैदा होने वाले प्राकृतिक स्रोतों पर निर्भर रहते हैं। आखिर यह चक्र कहां और क्यों टूट रहा है? इसके अलावा यह तकनीक भी ईजाद की जाएगी कि मिलों, फैक्ट्रियों व कारखानों से निकलने वाला दूषित जल को नदियों में गिरने से पहले उसे साफ किया जा सके। एनएसआइ के प्रोफेसर व रिसर्च स्कॉलर चीनी मिलों का विश्लेषण करेंगे जबकि सीएसजेएमयू गंगा शोधन पर काम करेगा। शोध परियोजना तैयार कर केंद्र सरकार को भेजने की तैयारी है।

विवि व एनएसआइ के बीच सोमवार को हुए करार के दौरान मौजूद कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता व एनएसआइ के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन व कुलसचिव डॉ. विनोद कुमार सिंह •

- सीएसजेएमयू व एनएसआइ मिलकर करेंगे शोध, हुआ करार
- मिलों और टेनरियों में लग सकेंगे छोटे शोधन संयंत्र
- गंगा व अन्य नदियों के साथ जलीय जीवों को मिलेगी राहत

बायोगैस व बायोफ्यूल बनाने पर काम शुरू

एनएसआइ निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि चीनी मिलों से निकलने वाले कचरे से बायोगैस व बायोफ्यूल बनाने पर काम शुरू हो चुका है। अब सीएसजेएमयू के साथ काम को गति दी जाएगी।

पेटेंट कराई जाएगी तकनीक : एनएसआइ व सीएसजेएमयू के संयुक्त शोध कार्य के तहत ईजाद की जाने वाली नई तकनीक को पेटेंट कराने के साथ उसका व्यावसायीकरण भी किया जाएगा।

सीएसजेएमयू व एनएसआई ने एनर्जी फील्ड में मिलाया हाथ

दोनों संस्थान मिलकर काम करेंगे, फैकल्टी एक्सचेंज को लेकर बनी सहमति

KANPUR (27 May): नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट(एनएसआई) ने सीएसजेएमयू के साथ एनर्जी फील्ड पर मिलकर काम करने के लिए करार किया है. मंडे को सिटी के दोनों एकेडमिक इंस्टीट्यूशन के हेड ने एमओयू साइन किया. एनएसआई के डायरेक्ट प्रो. नरेंद्र अग्रवाल ने बताया कि फैकल्टी एक्सचेंज प्रोग्राम पर भी सहमति बनी है. सॉलिड व लिक्विड वेस्ट मैनेजमेंट से बायो गैस बनाई जाएगी. इस गैस से सीएसजेएमयू के हॉस्टल में खाना पकाया जाएगा. बायो गैस प्रोजेक्ट पर एक जून से काम स्टार्ट कर दिया जाएगा.

इंडस्ट्रियल कचरे को भी साफ करेंगे

फैकल्टी एक्सचेंज प्रोग्राम के बारे में एनएसआई डायरेक्टर ने बताया कि सीएसजेएमयू के बायो टेक्नोलॉजी डिपार्टमेंट में एनएसआई की फैकल्टी शुगर इंडस्ट्री में बायो टेक्नोलॉजी के रोल के बारे में बताएंगे. वहीं सीएसजेएमयू की फैकल्टी हमारे यहां बायोटेक्नोलॉजी पढ़ाएंगे. गंगा के इंडस्ट्रियल कचरे को हटाकर पानी कैसे साफ किया जाए, इस पर दोनों संस्थान मिलकर काम करेंगे.

एनएसआई के डायरेक्ट प्रो. नरेंद्र अग्रवाल ने बताया कि सॉलिड व लिक्विड वेस्ट मैनेजमेंट से बायो गैस बनाई जाएगी.

कैंपस में बायो गैस बनेगी

सीएसजेएमयू की वीसी प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बताया कि बायो साइंस एंड बायो टेक्नोलॉजी के डॉ. शाश्वत कटियार व एनएसआई की टीम मिलकर बायो गैस प्रोजेक्ट पर काम करेगी. लिक्विड, सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट पर विवि प्रशासन ने काम शुरू कर दिया है.

सीएसजेएमयू व शर्करा संस्थान के शिक्षक-छात्र करेंगे संयुक्त शोध-अनुसंधान

कानपुर (एसएनबी)। सीएसजेएमयू व राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के शिक्षक-छात्र अब मिलकर पारस्परिक हितों के विषयों पर शोध-अनुसंधान करेंगे। शोध के लिए जिन क्षेत्रों को चिह्नित किया गया है, उनमें विभिन्न पर्यावरणीय विषयों सहित कचरे का उपयोग कर बायो फ्यूल व गैस निर्माण तकनीक विकसित करना मुख्य है।

दोनों संस्थानों के बीच हुआ एमओयू

विभिन्न पर्यावरणीय विषयों सहित कचरे से बायो फ्यूल-गैस निर्माण पर करेंगे शोध

विवि के एकेडमिक सेंटर में आयोजित कार्यक्रम में सहमति पत्र पर हस्ताक्षर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन व विवि रजिस्ट्रार डॉ. विनोद कुमार सिंह ने विवि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की उपस्थिति में किये। शर्करा संस्थान के अनुसार दोनों संस्थान संयुक्त रूप से विभिन्न पारस्परिक हित के विषयों पर शोध करेंगे, जिनमें नवीन तकनीक द्वारा कचरे को ऊर्जा (बायो फ्यूल एवं गैस) में परिवर्तित करने, चीनी मिल के सह-उत्पादों से मूल्यवर्द्धक उत्पाद बनाने एवं विभिन्न प्रक्रियाओं हेतु माइक्रोबियल स्ट्रेंस का ऑप्टीमाइजेशन एवं करेक्टराइजेशन शामिल है। दोनों संस्थानों के बीच फैकल्टी का आदान-प्रदान भी किया जाएगा। विवि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने आशा व्यक्त की कि शर्करा संस्थान के साथ सामंजस्य से न केवल नवीन प्रक्रियाएं एवं उत्पाद विकसित करने में सहायता मिलेगी, अपितु दोनों संस्थानों के विद्यार्थियों को अनुसंधान एवं रोजगार के अवसर भी अधिक मिलेंगे। शर्करा संस्थान के निदेशक ने बताया कि अनुसंधान के फलस्वरूप तैयार होने वाली नवीन तकनीकों का पेटेंट करा व्यावसायीकरण भी किया जाएगा और इससे होने वाली आय को दोनों संस्थानों के बीच समान अनुपात में बांटा जाएगा।

विवि मीडिया प्रभारी प्रो. संजय स्वर्णकार ने बताया कि सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट, रिन्यूएबल एंड ग्रीन रिन्यूएबल एनर्जी सोर्सेस व गंगा प्रदूषण दूर करने के लिए जीरो लिक्विड डिस्चार्ज तकनीक सहित अन्य विषयों पर शोध-अनुसंधान किये जाएंगे। एमओयू साइन किये जाने के अवसर पर विवि के बायोटेक्नोलॉजी विभाग की प्रभारी डॉ. वर्षा गुप्ता, प्रो. नंदलाल, प्रो. सुधीर अवस्थी, डॉ. अंजू यादव, डॉ. विवेक सिंह सचान व शर्करा संस्थान की प्रो. सीमा परोहा भी मौजूद रहीं।

एमओयू एक्सचेंज करते एनएसआई निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन व विवि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता।